IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास मे घरानों के साथ महाविद्यालय संगीत शिक्षा का योगदान

1. **अजिंक्य सुनील इनामदार**, शोध छात्र, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय,
2. **डॉ. रंजना सक्सेना**, शोध निर्देशिका, श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय,

सारांश -
भारतीय शास्त्रीय संगीत एक विस्तृत अध्ययन और अध्यापन का विषय है। वर्तमान भारतीय शास्त्रीय संगीत के बारे मे कुछ लिखने से पहले हमें शास्त्रीय संगीत के इतिहास, उसके विकास, घरानों की परंपरा और उनकी विशेषताओं के बारे मे जरूर सोचना है। हमें शास्त्रीय संगीत की विशेषताओं को समझना है। आधुनिक युग मे शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है। संगीत का प्रभाव समस्त संसार पर दिखता है। हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत आध्यात्मिक जीवन मे बहुत रहस्यमय रहा है। काव्य कला, चित्र कला, मूर्ति कला, वास्तु कला और संगीत कला ललित कलाओं के अंतर्गत आती हैं तथा इन ललित कलाओं मे संगीत का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। अन्य ललित कलाओं के मूलभूत आधार स्थूल पदार्थ हैं। संगीत का मूलभूत अधार नाद है और उसका गुण आकाश तत्व होने की वजह से संगीत सर्वव्यापक है। संगीत का क्षेत्र अत्यधिक व्यापक होने से अन्य ललित कलाओं में उसका स्थान महत्वपूर्ण है। इसमे स्वर, ताल और लय के माध्यम से संगीतज्ञ आपने मनोगत भावों को व्यक्त करता है। इसका संबंध मानव जीवन से है। संगीत कला ईश्वर प्रदत्त कला मानी जाती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास मे गुरु-शिष्य परंपरा का विशेष महत्व है। भारत में समय- समय पर ऐसे संगीतज्ञ होते रहे जिन्होंने अपनी कला-साधना से संगीत की उपासना की और कुछ समय बाद इनकी कलागत शैली ने परंपरा का रूप धारण कर लिया। पहले भारत मे जाति गायन, छंद, प्रबंध, ध्रुवपद और धमार गाये जाते थे। अरब और ईरान के संगीतज्ञों के आने के बाद हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत में परिवर्तन हुआ। सदारंग-अदारंग ने अनेक ख्यालों का निर्माण किया और आधुनिक ख्याल गायन को जन्म दिया।

संकेताक्षर- महाविद्यालय शिक्षा में संगीत, घराने

उद्देश्य-

1. महाविद्यालय शिक्षा में विद्यार्थियों को घरानों की विशेषताओ की जानकारीयो का अध्ययन करना।
2. घरानों की गायकी की विशेषताओ का और उनके इतिहास का अध्ययन करना।
3. घरानों की गायकी मे किये जाने वाले प्रयोग जैसे खुली आवाज, विशेष प्रकार के खटके, शब्दो का उच्चारण, बंदिशों के प्रकार, मुरकी, कण स्वर आदि का अध्ययन करना ।

शोध विधि - प्रस्तुत शोध-पत्र कार्य को पूरा करने के लिए उपलब्ध एवं प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन किया गया है। इस विधा से जुड़े विद्वान संगीतज्ञों से संपर्क स्थापित कर शोध की सामग्री एकत्रित की गई है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट एवं निम्नलिखित स्रोतों से भी शोध विषयक सामग्री प्राप्त कर शोध-पत्र को प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया गया है।

1. पुस्तक एवं पत्रिकाएं 2.डिजिटल मीडिया 3.निरीक्षण तकनीक 4.शोध-पत्र

प्रस्तावना- संगीत का मुख्य उद्देश्य रंजन करना है, चित्त को प्रसन्न करना है। भारतीय संगीत की दशा एक सीमा तक बड़ी शोचनीय है। शास्त्रीय संगीत को और अधिक आकर्षक बनाने के प्रयास निरंतर चल रहे हैं और उनमें सफलता भी मिल रही है। शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम पहले की अपेक्षा अधिक होने लगे है परंतु उसमे जीवन नही है। सरल संगीत कुछ अच्छी दशा मे है।

संगीत का प्रचार और प्रसार आजकल पहले से अधिक हो रहा है परंतु उसका स्तर ऊंचा नहीं है। आजकल सभी गायक बड़े-बड़े राग गाते है परंतु उनकी गायकी का ढंग अच्छा नही है, उनकी गायकी जनता को पसंद नही आती। कठिन होने के कारण जन सामान्य शास्त्रीय संगीत में विशेष रुचि नहीं लेता। जब संगीत का उद्देश्य ही रंजन है तो वो आनंद प्राप्त होना चाहिये। जब तक वह आनंद प्राप्त नही होता तब तक संगीत के ऊपर अन्याय है। किसी लेखक ने लिखा है जब तक गायन-वादन सुनकर चित्त और आत्मा को शांति नही मिलती, ऐसा गाना-बजाना निर्दयता से किसी की हत्या करना है। इसीलिए इस स्थिति को सुधारने के लिए वर्तमान काल मे प्रत्येक शाला और महाविद्यालय मे संगीत का पाठ्यक्रम अनिवार्य करना चाहिए। शास्त्रीय संगीत को ज्यादा से ज्यादा आम लोगों तक पहुंचाना चाहिये।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास एवं सफलता में घरानों का विशेष स्थान है। घरानों पर विशेष महत्व केंद्रित कर घरानों का विस्तृत अध्ययन किया गया है, जो इस शोध कार्य का आत्मा है। वर्तमान काल में महाविद्यालय शिक्षा में घराने की विशेषताओं को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा में जोड़ा जाए इस विषय पर गहन विचार करना आवश्यक है।

संगीत का उद्देश्य आनंद प्राप्ति और सौंदर्य बोध है, इसके साथ ही सामाजिक उपयोगिता भी संगीत का उद्देश्य होना चाहिए। कला के लिए कला के उद्देश्य के साथ 'बहुजन सुखाय' उपलब्धि भी होनी चाहिए। भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास में आदिम कालखंड से लेकर आधुनिक कालखंड तक बहुत बदलाव देखे गये। आधुनिक काल में भारतीय संगीत शास्त्र के क्षेत्र में थोड़ा- बहुत काम हुआ है जो भारतीय संगीत के लिए गौरव की बात है। तीन स्वरों से प्रारंभ हुआ हमारा भारतीय संगीत आज विश्व के सिर का ताज बना हुआ है। दुर्भाग्य से भारत का प्राचीन संगीत लिपिबद्ध रूप में रखा नहीं गया और जो कुछ रखा भी गया तो प्राप्त तथा पर्याप्त नहीं होता। अतः सांगीतिक स्वरलिपि के आधार पर प्राचीन भारतीय संगीत का स्वरूप निर्धारण, संकलन, संग्रह, सम्पादन आदि कुछ भी सम्भव नहीं है।

घराने का अर्थ और उद्भव- 'घराना' शब्द की उत्पत्ति 'घर' से हुई है, जिसका तात्पर्य है एक ऐसा संगीत परिवार या परंपरा जो विशिष्ट शैली में गायन या वादन करता है। घराना केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं होता, यह उन शिष्यों और अनुयायियों का भी समूह होता है जो गुरु की शैली को अपनाते हैं और आगे बढ़ाते हैं। घरानों की परंपरा विशेष रूप से 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में मजबूत हुई, जब संगीत दरबारों और रियासतों में संरक्षित था। विभिन्न क्षेत्रों में बसे संगीतज्ञों ने अपनी-अपनी शैली विकसित की और इस प्रकार विभिन्न घरानों का जन्म हुआ। खयाल गायकी में प्रमुख घरानों में ग्वालियर, किराना, जयपुर-अतरौली, पटियाला, आगरा, बनारस और भिंडीबाज़ार घराना शामिल हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों का महत्व

भारतीय शास्त्रीय संगीत, जिसकी जड़ें हजारों वर्ष पुरानी हैं, एक जीवंत परंपरा है जो समय के साथ विकसित होती रही है। इस संगीतमय परंपरा में 'घराना' एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है, जिसने संगीत की विविध शैलियों को जन्म दिया और उन्हें संरचित, संरक्षित और विकसित किया। घराना न केवल गायन या वादन की शैली को दर्शाता है, बल्कि एक सांस्कृतिक परंपरा, अनुशासन और गुरुकुल परंपरा का भी प्रतीक है। प्रत्येक घराने की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ, रचनात्मक दृष्टिकोण और संगीत सिखाने की विधियाँ होती हैं।

1. संगीत की विविधता का स्रोत- घरानों के कारण ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में इतनी विविधता आई है। हर घराना किसी राग को प्रस्तुत करने का अपना विशिष्ट तरीका अपनाता है, जिससे एक ही राग में कई भावनात्मक रंग उत्पन्न होते हैं। इसीलिए संगीत कलाकार, रसिक वर्ग, विद्यार्थी, गुंनीजन घरानों के शास्त्रीय गायन से अत्यंत प्रभावित हुए हैं।

2. परंपरा और तकनीक का संरक्षण- घराने संगीत की परंपराओं को जीवित रखते हैं। प्रत्येक घराने में गायकी या वादन की कुछ विशिष्ट तकनीकें होती हैं, जैसे मींड, गमक, बोल-बांट, आलाप आदि, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती हैं।

3. गुरु-शिष्य परंपरा का पोषण- घराने गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित होते हैं। यह न केवल संगीत सिखाने की विधि है, बल्कि एक नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अनुशासन भी है।

4. कलात्मक पहचान- घराना एक कलाकार की पहचान बनाता है। जब कोई गायक या वादक किसी घराने से जुड़ा होता है, तो श्रोता को यह संकेत मिल जाता है कि वह किस तरह की प्रस्तुति की अपेक्षा कर सकते हैं।

5. अनुसंधान और नवाचार का आधार- घराने अक्सर अपनी विशेष शैली में प्रयोग करते हैं, जिससे संगीत का विकास होता है। उदाहरण के लिए, पटियाला घराने की तानों में गतिशीलता और लचक होती है, जबकि किराना घराना राग की भावना को गहराई से उभारने पर बल देता है।

शास्त्रीय संगीत में गायन शैली के घराने-

1. ग्वालियर घराना 2. किराना घराना 3. अतरौली-जयपुर घराना 4. आगरा घराना 5. पटियाला घराना विशेषता 6. बनारस घराना 7. मेवाती घराना 8. भिंडीबाजार घराना

भारतीय शास्त्रीय संगीत में 'घराना' शब्द का अर्थ होता है एक विशिष्ट संगीत शैली या परंपरा, जो किसी गुरु या क्षेत्र विशेष से जुड़ी होती है। प्रत्येक घराने की अपनी अलग पहचान, गायकी की शैली, तकनीकी विशेषताएँ और सौंदर्यबोध होते हैं। इन प्रमुख घरानों की परंपराएँ समय के साथ विकसित हुई हैं और इनकी अपनी गुरु-शिष्य परंपरा, गायकी की शैली, शिक्षण विधि और सौंदर्यबोध की एक खास परंपरा रही है। संक्षेप में प्रमुख घरानों की विशेषताएँ-

1. **ग्वालियर घराना, विशेषताएँ**-

रागों को पारंपरिक ढंग से प्रस्तुत करना और बंदिशों में स्पष्टता बनाए रखना।

शिक्षण में अनुशासन और बंदिशों का रटंत अभ्यास अनिवार्य।

स्पष्ट उच्चारण, सरल और सरस बंदिशें।

तानों का इस्तेमाल बहुत संतुलित और सौम्य होता है।

लय और राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

2. **किराना घराना, विशेषताएँ-**

गुरु-शिष्य परंपरा में लंबे समय तक मौखिक शिक्षण।

सुर के भीतर सूक्ष्म बदलावों पर महीन ध्यान देना।

स्वरप्रधान गायकी, धीरे-धीरे राग का विस्तार। मींड़ और गमक का प्रयोग अत्यधिक।

घराने के कलाकार राग की आत्मा को उजागर करने में वर्षों लगाते थे, धीरे-धीरे शिष्य को तैयार किया जाता।

इस घराने का ज़ोर, स्वर की शुद्धता और भाव-प्रदर्शन पर होता है। विलंबित ख्याल गायकी में माहिर।

नादोपासना पर बल, स्वर की सूक्ष्मता, लंबी मीनकारी।

3. जयपुर-अतरौली घराना, विशेषताएँ-

रागों की जटिलता और विविधता के लिए प्रसिद्ध।

जटिल तानों और ताल के जटिल प्रयोग में निपुण।

अभ्यास में तालमूलक सोच यानी लय को केंद्र में रखना।

विशेष रूप से दुर्लभ और मिश्रित रागों को गाने के लिए प्रसिद्ध।

स्थायी और अंतरे के मध्य सुस्पष्ट अंतर।

जटिल रागों की गायकी, रागों की विविधताएं, तानों की सजावट।

4. आगरा घराना, विशेषताएँ-

बोल-बांट, बोल-तान और नोम-तोम alap सिखाने की परंपरा।

इस घराने में ध्रुपद और ख़याल का समन्वय दिखाई देता है।

बोल-बांट और बोल-तान पर अधिक बल।

गायकी में दमदार आवाज़ में ठहराव प्रमुख विशेषता।

लय और ताल के खेल में प्रसिद्ध है।

ध्रुपद अंग से प्रभावित, बोलबांट और लयकारी में उत्कृष्टता।

5. पटियाला घराना, विशेषता- तानों की तीव्र गति, खटके-मुरकियों का प्रयोग, रंजक गायकी।

6. बनारस घराना, विशेषता- ठुमरी, टप्पा, धमार, रसीली गायकी।

7. मेवाती घराना, विशेषता- भक्ति भावना, स्पष्ट रचना गायन, सहज श्रोतव्य गायकी।

8. भिंडीबाजार घराना, विशेषता - मींड और गमक पर ज़ोर, रचनात्मक तानों का प्रयोग।

संगीत शिक्षा संस्थान जो घरानेदार संगीत सिखा रहे हैं-

आई.टी.सी. संगीत रिसर्च अकादमी, कोलकाता में मुख्यत: किराना, पटियाला, एवं आगरा घराने के प्रमुख गुरुओं द्वारा उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रदान की जाती है।

भातखंडे संगीत संस्थान, लखनऊ – मिश्रित घरानों की परंपरा

गंधर्व महाविद्यालय, दिल्ली तथामुंबई – विभिन्न घरानों के गुरु उपलब्ध हैं।

अली अकबर कॉलेज ऑफ म्यूजिक (यूएसए) मैहर घराने की परंपरा

कला अकादमी, गोवा – गोवा और कर्नाटक क्षेत्रीय घराने की परंपरा

घरानों के गुण

1. **स्थिरता और अनुशासन**- घराने अनुशासित शैली में राग प्रस्तुति को बढ़ावा देते हैं, जिससे गायन और वादन में परिपक्वता आती है।

2. गहराई और परिष्कार- घराने राग की सूक्ष्मता को समझने और अभिव्यक्त करने में मदद करते हैं। यह संगीत को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि साधना बनाते हैं।

3. प्रशिक्षण की विशिष्ट विधियाँ- हर घराने में प्रशिक्षण की अलग प्रणाली होती है, जिससे शिष्य को विशिष्ट शैलियाँ और तकनीकें सिखाई जाती हैं।

4. सांस्कृतिक विविधता का प्रतिबिंब- हर घराना उस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है जहाँ वह विकसित हुआ, जैसे जयपुर घराने में राजस्थानी सौंदर्य-बोध परिलक्षित होता है।

5. रचनात्मक प्रयोगों की प्रेरणा- विभिन्न घराने नई बंदिशें, आलाप और तानों के साथ प्रयोग करते हैं, जिससे संगीत समृद्ध होता है।

घरानों के दोष या सीमाएँ

1. रूढ़िवादिता- कुछ घरानों में परंपरा का इतना अधिक आग्रह होता है कि नवाचार या प्रयोग को हतोत्साहित किया जाता है।

2. सीमितता का भाव- किसी एक घराने की शैली में बंधकर गायक या वादक कई बार अन्य शैलियों या रचनात्मक दृष्टिकोणों को नहीं अपना पाते।

3. घराना संकीर्णता- कुछ कलाकार अपने घराने को श्रेष्ठ मानकर अन्य शैलियों की उपेक्षा करतेहैं, जिससे संगीत की व्यापकता को हानि पहुँचती है।

4. विविधता में भ्रम- घरानों की अत्यधिक विविधता कभी-कभी नए श्रोताओं या विद्यार्थियों केलिए भ्रम उत्पन्न करती है, विशेषकर जब एक ही राग की भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ सामनेआती हैं।

5. गुणवत्ता में असमानता- हर घराने में सभी कलाकार समान स्तर के नहीं होते, जिससे घराने की छवि पर असर होता है।

वर्तमान काल मे भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास मे घरानों के साथ महाविद्यालय संगीत शिक्षा का योगदान- वर्तमान मे भारतीय संगीत के क्षेत्र में संस्थागत संगीत-शिक्षण का प्रसार और प्रचार द्रुतगति से हो रहा है। गायन, वादन, नृत्य की विशेष चर्चा की जाती है और शिक्षा में उनका स्थान महत्वपूर्ण है। भारतीय संगीत की प्रधानता के साथ-साथ कलाकार और विद्यार्थियों की अभि रुचि बढ़ती जा रही है। संगीतशास्त्र के अनेक ग्रंथों का लेखन हुआ है। वर्तमान युग को संगीत कला का प्रचार काल माना जाता है।

बडे-बडे संगीतज्ञों ने संगीत के प्रचार और प्रसार के लिए संगीत विद्यालययो की स्थापना की है। शास्त्रीय सिद्धांत पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। संगीत विषयक जटिल समस्याओं का का समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है। आधुनिक काल में कलाकारों और संगीतज्ञों की प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि भारतीय संगीत के प्रचार और प्रसार में सहयोग प्रदान करना वे अपना कर्तव्य भी समझते है। वे जानते है की प्रचार और प्रसार ही भारतीय संगीत का भविष्य उज्ज्वल करेगा।

आधुनिक युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत का क्षेत्र विस्तृत और व्यापक है। इस शिक्षा का प्रचार और प्रसार धीरे-धीरे उत्कर्ष पर पहुंच रहा है। अब तक जो भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकास हुआ है उसका मुख्य कारण आधुनिक सभ्यता का विकास है।

महाविद्यालय और शिक्षण संस्थाओ के पाठ्यक्रम में संगीत वैकल्पिक विषय के रूप में दिया गया है जिससे शास्त्रीय संगीत शिक्षित वर्ग में आ गया है। पुरुष वर्ग शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण करता था, करता है, परंतु स्त्री वर्ग भी उससे अछूता नही है और इसी कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही है।

घरानों का सांगीतिक अध्ययन का अर्थ होता है — भारतीय शास्त्रीय संगीत में विभिन्न घरानों की शैलियों, परंपराओं, तकनीकों और संगीत की प्रस्तुति के तरीकों का गहराई से अध्ययन करना। यह अध्ययन संगीत विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और कलाकारों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे उन्हें संगीत के विविध आयामों की समझ मिलती है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार एवं विकास में बंदिश के माध्यम से ग्वालियर घराने, आगरा घराने, किराना घराने तथा जयपुर घराने मे संगीत का संवर्धन एवं पुनर्स्थापना करने में महान संगीत कलाकारों, साधकों, वाग्गेय कारों, रचनाकारों तथा विद्वानों का योगदान रहा है। रचनाकारों द्वारा रचित अनेक रचनाओं में स्वर एवं शब्द का एक ऐसा अनूठा संयोग परिलक्षित होता है जो, अर्थानुकुल एवं भावानुकूल वातावरण को स्थापित करने में सक्षम रहता है।

अनेक वेद मंत्रों, स्तोत्रों तथा कबीर, मीरा और कृष्ण लीलाओं का वर्णन, शिवस्तुति, गणेशस्तुति, संपूर्ण रसों का वर्णन, रासलीला आदि भावों के अनुसार राग ताल में जिस कुशलता से बांधा है वह अद्वितीय तथा अविस्मरणीय है। घरानों की बंदिशों में जो भावनात्मक प्रगल्भता दिखाई है उसे सुनने एवं अध्ययन करने पर उनके रचनाकार के रूप में घरानों के कार्य की अलौकिकता का ज्ञान होता हे। वर्तमान काल मे भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास मे घरानों के साथ महाविद्यालय संगीत शिक्षा का योगदान, अध्ययन करने से कुछ मुख्य निष्कर्ष सामने आते है, वे निम्न प्रकार के है।

वर्तमान समय में जब इन दोनों माध्यमों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया, तो कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए हैं। जो इस प्रकार हैं।

परंपरा और आधुनिकता का समन्वय- घरानों ने शास्त्रीय संगीत की गहराई, सौंदर्य और विविधता को जीवित रखा है, जबकि संगीत महाविद्यालयों ने इसे सुव्यवस्थित, सुलभ और शैक्षणिक रूप में प्रस्तुत किया है। यह समन्वय आज संगीत शिक्षा को परंपरागत और आधुनिक दोनों दृष्टिकोणों से समृद्ध बना रहा है।

संगीत का लोकतंत्रीकरण- जहाँ पहले संगीत केवल कुछ विशिष्ट परिवारों और वर्गों तक सीमित था, वहीं महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों ने इसे समाज के हर वर्ग तक पहुँचाया है। अब कोई भी छात्र संगीत को विषय के रूप में चुन सकता है और व्यावसायिक रूप से आगे बढ़ सकता है।

संगीत का शैक्षणिकीकरण- आज संगीत केवल प्रदर्शन की कला नहीं रह गया है, बल्कि यह एक पूर्ण शैक्षणिक विषय के रूप में विकसित हो गया है। इसमें थ्योरी, मनोविज्ञान, इतिहास, अनुसंधान और शिक्षण विधियों का भी समावेश हुआ है। यह परिवर्तन संगीत के गहन अध्ययन और शोध को प्रोत्साहित करता है।

घरानों की शैली में एकरूपता- महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सभी घरानों की शैलियों को समान रूप से प्रस्तुत करने के कारण कहीं-कहीं घरानों की विशिष्टताएँ छुप जाती हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास में महाविद्यालयीय संगीतशिक्षा के अध्ययन से जुड़े संभावनाएँ और सुझाव-

1. घरानों की शैली के डिजिटल संरक्षण की संभावना- प्रत्येक घराने की विशिष्ट शैली, बंदिशें और राग-प्रस्तुति को डिजिटल रूप में रिकॉर्ड कर संरक्षित किया जा सकता है।

2. घराना-आधारित पाठ्यक्रम का विकास-संगीत विश्वविद्यालयों में अलग-अलग घरानों पर आधारित वैकल्पिक विषय बनाए जा सकते हैं।

3. गुरु-शिष्य परंपरा और संस्थागत शिक्षा का समन्वय- एक ऐसा मॉडल विकसित किया जा सकता है जहाँ विद्यार्थी संस्थानिक शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तिगत गुरु से भी तालीम ले सकें।

4. रिसर्च और इनोवेशन की नई दिशा- घरानों की शैलीगत विशेषताओं पर आधारित थीमेटिक शोध और उनके आधुनिक संदर्भ में उपयोग पर रिसर्च की संभावना है।

घरानेदार संगीत का वैश्विक प्रचार- विदेशी विश्वविद्यालयों और संगीत उत्सवों में भारतीय घरानों की शैली को प्रदर्शित एवं सिखाने की संभावना बढ़ रही है।

शिक्षण में घरानों की मौलिकता बनाए रखना-पाठ्यक्रम बनाते समय हर घराने की मौलिक शैली को समझकर उसे पाठ्य सामग्री में सही ढंग से प्रस्तुत किया जाए।

वयोवृद्ध कलाकारों से संवाद और दस्तावेजीकरण- घरानों के वरिष्ठ संगीतज्ञों से संवाद करके उनकी शैली, तकनीक और अनुभव को दस्तावेज़ और आर्काइव करना चाहिए।

अंतर-घराना संवाद- विद्यार्थियों को विभिन्न घरानों के बीच शैलीगत अंतर को समझने के लिए कार्यशालाएँ और सेमिनार आयोजित करने चाहिए।

लोक-संगीत और शास्त्रीय संगीत का मेल- घरानेदार संगीत को लोक-संगीत और समकालीन संगीत से जोड़कर उसकी पहुँच और लोकप्रियता को बढ़ाया जा सकता है।

ऑनलाइन संगीत शिक्षा का सशक्तिकरण- घरानों की शिक्षा को ऑनलाइन माध्यम से विश्वभर के छात्रों तक पहुँचाना है।

निष्कर्ष- भारतीय शास्त्रीय संगीत एक समृद्ध और गहरी परंपरा है, जिसकी जड़ें हजारों वर्षों पुरानी हैं। आधुनिक भारतीय शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि जानने के लिए घरानेदार संगीत की जानकारी तथा गहरा ज्ञान अनिवार्य है। घरानों के बिना भारतीय संगीत की कल्पना करना संभव नहीं है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के इतिहास के हर पन्ने पर घरानों की छाप नजर आती है। इसीलिए घरानों के बिना भारतीय संगीत ऐसा प्रतीत होगा जैसा जड़ के बिना वृक्ष। भारतीय संगीत में घराना वह परंपरागत संगीत है जिसे प्रतिष्ठित घरानेदार संगीतज्ञों ने कड़े परिश्रम से और अपनी निरंतर साधना से सुरक्षित रखा है और दूसरों तक पहुँचाया है। बड़ी उदारता से उन्होने अपने संगीत के ज्ञान-भंडार को अपनी शिष्य परंपरा को बाँटा और इस तरह घरानेदार संगीत को जीवित रखा।

घराना भारतीय संगीत की अनोखी परंपराओं की कुबेर संपत्ति है। यदि कला की रक्षा करनी है तो घरानो के अस्तित्व को अबाधित कायम रखना अनिवार्य है। इस संगीत की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी गुरु-शिष्य परंपरा और घरानों में निहित विविधता रही है। वहीं दूसरी ओर, आधुनिक युग में महाविद्यालयीय संगीत शिक्षा ने इस परंपरा को संरक्षित करने और विकसित करने में अहम भूमिका निभाई है।

शास्त्रीय संगीत का सौंदर्य स्वर, लय और बंदिश पर आधारित होता है। कला की शिक्षा ग्रहण करते समय कलाकार को अलग-अलग अनुभव होते है। शिक्षा देने वाला गुरु भी उत्तम गायक और मेहनती होना जरुरी होता है। तभी तो अच्छे कलाकार तैयार हो सकते है । गुरु का उत्तम मार्गदर्शन शिष्य को मिलता है तभी वह अच्छा गायक और यशस्वी कलाकार बन सकता है। कलाकारों को प्रोत्साहन देना चाहिए। प्रोत्साहन से कलाकार को समाधान मिलता है, उसके अंदर उत्साह निर्माण होता है और वह ज्यादा मेहनत करता है और प्रगति कर सकता है।

शास्त्रीय संगीत की महफ़िल में उपशास्त्रीय संगीत भी आजकल गाया जाता है, जैसे ठुमरी, दादरा, कजरी, होरी, चैती, नाट्यगीत, भजन, ग़ज़ल, भावगीत इत्यादी। ख्याल गाते समय बंदिशों के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर गाना, कही पर भी तिहाई लेना, बीच मे ही तान लेना, गलत जगह गलत स्वर लेना, बीच में नोटेशन गाना आदि इन सब बातों से कलाकारो का गायन प्रभावी नही होता। उसमे से भाव, रस, अर्थ, प्रसंग दूर हो जाते है कलाकार का गायन क्लिष्ट व नीरस लगता है। कलाकार का गायन मनोरंजक, आनंद देनेवाला, रंजनात्मक हो तो श्रोता, रसिक और विद्यार्थियों को शास्त्रीय गायन सुनने में रुचि उत्पन्न हो सकती है। अच्छे नागरिक के साथ-साथ अच्छे कलाकार और अच्छे श्रोता वर्ग निर्माण होना जरुरी है तभी हमारी कला, संस्कृति जिंदा रहेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची -

कुमार अविनाश, "रामपुर सहसवान घराना: हिंदुस्तानी संगीत की एक उत्कृष्ट परंपरा" आईएसबीएन 978- 93-8477 6- 19-0 वर्ष 2020 नैतिक प्रकाशन, प्लॉट नंबर ए- 64 गली नंबर -1 करन एनक्लेव चिपयाना बुजुर्ग, गौतम बुद्ध नगर- 201009 (उत्तर प्रदेश)

गर्ग लक्ष्मी नारायण, निबंध संगीत, प्रकाशक संगीत कार्यालय, हाथरस, उत्तर प्रदेश 2041001, पब्लिकेशन नंबर 181 आईएसबीएन 81-85057- 29- X सन 2012

जैन मोनिका,"पांचवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक भारतीय संगीत का विकास"आईएसबीएन 978-9 3-84 776- 14- 5 वर्ष 2017 नैतिक प्रकाशन, प्लॉट नंबर ए- 64 गली नंबर -1 करन एनक्लेव चिपयाना बुजुर्ग, गौतम बुद्ध नगर- 201009 (उत्तर प्रदेश)

धर्मपाल, किराना घराने की गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन, प्रकाशक- ओमेगा पब्लिकेशंस दरियागंज नई दिल्ली संस्करण 2022,आईएसबीएन नंबर 978-81-8455-008-5

भातखंडे विष्णु नारायण, हिंदुस्तानी संगीत पद्धति क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 4, प्रकाशक संगीत कार्यालय, हाथरस आईएसबीएन नंबर 81-85057-19-8

मिश्र शंभु नाथ, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की घराना- परंपरा, आईएसबीएन 978-81-230- 1883-6 सन 2002 प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार